सरस्वती चालीसा (Saraswati Chalisa)

।। दोहा ।।

जनक जननि पद्मरज, निज मस्तक पर धरि।

बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि॥

।। चौपाई ।।

पूर्ण जगत में व्याप्त तव, महिमा अमित अनंतु।दुष्जनों के पाप को, मातु तु ही अब हंतु॥

जय श्री सकल बुद्धि बलरासी।जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी॥

जय जय जय वीणाकर धारी।करती सदा सुहंस सवारी॥

रूप चतुर्भुज धारी माता।सकल विश्व अन्दर विख्याता॥

जग में पाप बुद्धि जब होती।तब ही धर्म की फीकी ज्योति॥

तब ही मातु का निज अवतारी।पाप हीन करती महतारी॥

वाल्मीकिजी थे हत्यारा।तव प्रसाद जानै संसारा॥

रामचरित जो रचे बनाई।आदि कवि की पदवी पाई॥

कालिदास जो भये विख्याता।तेरी कृपा दृष्टि से माता॥

तुलसी सूर आदि विद्वाना।भये और जो ज्ञानी नाना॥

तिन्ह न और रहेउ अवलम्बा।केव कृपा आपकी अम्बा॥

करहु कृपा सोइ मातु भवानी।दुखित दीन निज दासहि जानी॥

पुत्र करहिं अपराध बहूता।तेहि न धरई चित माता॥

राखु लाज जननि अब मेरी।विनय करउं भांति बहु तेरी॥

मैं अनाथ तेरी अवलंबा।कृपा करउ जय जय जगदंबा॥

मधुकैटभ जो अति बलवाना।बाहुयुद्ध विष्णु से ठाना॥

समर हजार पाँच में घोरा।फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा॥

मातु सहाय कीन्ह तेहि काला।बुद्धि विपरीत भई खलहाला॥

तेहि ते मृत्यु भई खल केरी।पुरवहु मातु मनोरथ मेरी॥

चंड मुण्ड जो थे विख्याता।क्षण महु संहारे उन माता॥

रक्त बीज से समरथ पापी।सुरमुनि हदय धरा सब काँपी॥

काटेउ सिर जिमि कदली खम्बा।बारबार बिन वउं जगदंबा॥

जगप्रसिद्ध जो शुंभनिशुंभा।क्षण में बाँधे ताहि तू अम्बा॥

भरतमातु बुद्धि फेरेऊ जाई।रामचन्द्र बनवास कराई॥

एहिविधि रावण वध तू कीन्हा।सुर नरमुनि सबको सुख दीन्हा॥

को समरथ तव यश गुन गाना।निगम अनादि अनंत बखाना॥

विष्णु रुद्र जस कहिन मारी।जिनकी हो तुम रक्षाकारी॥

रक्त दन्तिका और शताक्षी।नाम अपार है दानव भक्षी॥

दुर्गम काज धरा पर कीन्हा।दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा॥

दुर्ग आदि हरनी तू माता।कृपा करहु जब जब सुखदाता॥

नृप कोपित को मारन चाहे।कानन में घेरे मृग नाहे॥

सागर मध्य पोत के भंजे।अति तूफान नहिं कोऊ संगे॥

भूत प्रेत बाधा या दुःख में।हो दरिद्र अथवा संकट में॥

नाम जपे मंगल सब होई।संशय इसमें करई न कोई॥

पुत्रहीन जो आतुर भाई।सबै छांड़ि पूजें एहि भाई॥

करै पाठ नित यह चालीसा।होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा॥

धूपादिक नैवेद्य चढ़ावै।संकट रहित अवश्य हो जावै॥

भक्ति मातु की करैं हमेशा।निकट न आवै ताहि कलेशा॥

बंदी पाठ करें सत बारा।बंदी पाश दूर हो सारा॥

रामसागर बाँधि हेतु भवानी।कीजै कृपा दास निज जानी॥

॥दोहा॥

मातु सूर्य कान्ति तव, अन्धकार मम रूप।

डूबन से रक्षा करहु परूँ न मैं भव कूप॥

बलबुद्धि विद्या देहु मोहि, सुनहु सरस्वती मातु।

राम सागर अधम को आश्रय तू ही देदातु॥

सरस्वती चालीसा का अर्थ सहित (Saraswati Chalisa ka Arth Sahit)

दोहा

जनक जननि पद्मरज, निज मस्तक पर धरि।
बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि॥

व्याख्या:
जनक की जननी और पद्मराज ब्रह्मा की पुत्री हैं, जिन्होंने अपने मस्तक पर अपने पुत्र को धारण किया। हे मातरानि सरस्वती, हे बुद्धि और बल की प्रदात्री, हम आपकी शरण में हैं, कृपा करके हमें बुद्धि और बल प्रदान करें॥

जय जय जय वीणाकर धारी। करती सदा सुहंस सवारी॥

व्याख्या:
हे वीणा धारिणी देवी, आपको जय-जय-जयकार हैं। आप हमेशा हंसती हुई वाहन पर सवार रहती हैं॥

रूप चतुर्भुज धारी माता। सकल विश्व अन्दर विख्याता॥

व्याख्या:
हे चार भुजाओं वाली माता, आपका सुंदर स्वरूप देखकर सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है॥

जग में पाप बुद्धि जब होती। तब ही धर्म की फीकी ज्योति॥

व्याख्या:
जब जगत में पाप और अज्ञान होता है, तब धर्म की ज्योति फीकी दिखाई पड़ती है॥

तब ही मातु का निज अवतारी। पाप हीन करती महतारी॥

व्याख्या:
इस समय, माता सरस्वती स्वयं को धरती हैं और उन्होंने पापरहितता का अवतार लिया है, महान कार्यों का समर्पण किया है॥

वाल्मीकिजी थे हत्यारा। तव प्रसाद जानै संसारा॥

व्याख्या:
वाल्मीकि जी भी पहले हत्यारा थे, लेकिन आपके प्रसाद से उन्होंने अपने जीवन को परिवर्तित किया, और फिर उन्होंने रामायण का रचना की॥

रामचरित जो रचे बनाई।आदि कवि की पदवी पाई॥

व्याख्या:
जिन्होंने श्रीराम की कथा को रचा और उन्होंने आदि कवि का गौरव प्राप्त किया॥

कालिदास जो भये विख्याता। तेरी कृपा दृष्टि से माता॥

व्याख्या:
कालिदास भी आपकी कृपा से महान हो गए हैं और आपकी कृपा की दृष्टि से वे प्रसिद्ध हो गए हैं॥

तुलसी सूर आदि विद्वाना। भये और जो ज्ञानी नाना॥

व्याख्या:
तुलसीदास, सूरदास, और अन्य विद्वान भी आपके भक्त हैं और ज्ञानी बने हैं॥

तिन्ह न और रहेउ अवलम्बा। केवल कृपा आपकी अम्बा॥

व्याख्या:
ये सभी विद्वान आपके शरणागत हैं और आपकी कृपा में ही उनका आश्रय है॥

करहु कृपा सोइ मातु भवानी। दुखित दीन निज दासहि जानी॥

व्याख्या:
हे मातु भवानी, कृपा करें, हम दुखित और दीन हैं, हमें अपने दास के रूप में जानें॥

पुत्र करहिं अपराध बहूता। तेहि न धरई चित माता॥

व्याख्या:
हे मातरानि, अपने पुत्र ने बहुत सारे अपराध किए हैं, लेकिन तुमने उन्हें कभी भी दण्डित नहीं किया॥

राखु लाज जननि अब मेरी। विनय करउं भांति बहु तेरी॥

व्याख्या:
हे जननी, अब मेरी लाज बचाओ, मैं विनम्रता से तुम्हारा भक्त बनता हूं॥

मैं अनाथ तेरी अवलंबा। कृपा करउ जय जय जगदंबा॥

व्याख्या:
हे जगदम्बा, मैं तुम्हारा अनाथ हूं, मैं आपकी शरण में हूं, कृपा करो, जय जय हो॥

मधु-कैटभ जो अति बलवाना। बाहुयुद्ध विष्णु से ठाना॥

व्याख्या:
तुमने मधुकैटभ रूप दिखाकर अत्यन्त बलवान होकर उनसे युद्ध किया और उन्हें हराया॥

समर हजार पांच में घोरा। फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा॥

व्याख्या:
तुमने घोर युद्ध में हजारों शत्रुओं के साथ संग्राम किया, फिर भी उनका मुख मुझसे नहीं हटा॥

मातु सहाय कीन्ह तेहि काला। बुद्धि विपरीत भई खलहाला॥

व्याख्या:
तुमने भगवान विष्णु की सहायता की और उन्हें समर्थन प्रदान किया, जिससे दुर्बुद्धि वालों का नाश हुआ॥

तेहि ते मृत्यु भई खल केरी। पुरवहु मातु मनोरथ मेरी॥

व्याख्या:
इसी कारण उन दुष्ट राक्षसों की मृत्यु हो गई और मेरी मनोरथी प्रार्थना पूरी हुई॥

चंड मुण्ड जो थे विख्याता। क्षण महु संहारे उन माता॥

व्याख्या:
तुमने चंड और मुण्ड को बड़ा प्रसिद्ध बनाया और एक क्षण में ही उनका संहार किया॥

रक्त बीज से समरथ पापी। सुरमुनि हृदय धरा सब कांपी॥

व्याख्या:
तुमने रक्तबीज से समर्थ पापी का विनाश किया और सुर-मुनि के हृदय को धरा में स्थान दिया, जिससे सभी कांप गए॥

काटेउ सिर जिमि कदली खम्बा। बार-बार बिन वउं जगदंबा॥

व्याख्या:
तुमने कदली खम्ब की भाँति उनके सिर को काट दिया और जगदंबा, तुम्हारे बिना वह बार-बार जन्म लेते रहते हैं॥

जगप्रसिद्ध जो शुंभ-निशुंभा। क्षण में बांधे ताहि तू अम्बा॥

व्याख्या:
जो शुम्भ-निशुम्भ को प्रसिद्ध किया गया है, उन्हें तुमने एक क्षण में ही बांध लिया है, हे अम्बा॥

भरत-मातु बुद्धि फेरेऊ जाई। रामचन्द्र बनवास कराई॥

व्याख्या:
हे भरतमाता, तुमने बुद्धि का फेरा लेकर भारत को समझाया और रामचन्द्र जी को वनवास भेजने का कारण बताया॥

एहिविधि रावण वध तू कीन्हा। सुर नरमुनि सबको सुख दीन्हा॥

व्याख्या:
इसी प्रकार, तुमने रावण का वध किया और सुर और नरों को सुख दिया॥

को समरथ तव यश गुन गाना। निगम अनादि अनंत बखाना॥

व्याख्या:
तुम्हारे यश और गुणों का गाना कोई भी कर सकता है, यह निगमों और अनादि से अनंत बार-बार कहा गया है॥

विष्णु रुद्र जस कहिन मारी। जिनकी हो तुम रक्षाकारी॥

व्याख्या:
तुम्हें विष्णु और रुद्र की तरह कहा जाता है, क्योंकि तुम सभी की रक्षा करती हो॥

रक्त दन्तिका और शताक्षी। नाम अपार है दानव भक्षी॥

व्याख्या:
तुम्हारे रक्तदान्तिका और शताक्षी रूप का वर्णन किया जाता है, और तुम्हारा नाम अपार है, दानवों को भी भक्षित करने वाला॥

दुर्गम काज धरा पर कीन्हा। दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा॥

व्याख्या:
तुमने जगत में दुर्गम कार्य को किया है और तुम्हारा नाम सभी जगहों पर प्रसिद्ध है॥

दुर्ग आदि हरनी तू माता। कृपा करहु जब जब सुखदाता॥

व्याख्या:
हे दुर्गा, तू सबकी हरण करने वाली है, कृपा करो, जब-जब भक्त तुमसे सुख चाहते हैं॥

नृप कोपित को मारन चाहे। कानन में घेरे मृग नाहे॥

व्याख्या:
हे मातरानि, तुम्हारी क्रोधित होने पर राजा भी तुम्हें मारना चाहते हैं, लेकिन वन में घेरे गए मृग की भाँति, तुम्हें कोई नहीं घेर सकता॥

सागर मध्य पोत के भंजे। अति तूफान नहिं कोऊ संगे॥

व्याख्या:
तुमने सागर मध्य से पोत को भंज दिया है और तुम्हारे साथ कोई अत्यंत तूफान नहीं कर सकता॥

भूत प्रेत बाधा या दुःख में। हो दरिद्र अथवा संकट में॥

व्याख्या:
तुम्हारी कृपा से भूत-प्रेत या किसी भी प्रकार के दुःखों में व्यक्ति रक्षित होता है, चाहे वह दरिद्र हो या संकट में पड़ा हो॥

नाम जपे मंगल सब होई। संशय इसमें करई न कोई॥

व्याख्या:
जो भी व्यक्ति तुम्हारा नाम जपता है, उसके लिए सभी मंगल होते हैं, इसमें कोई संशय नहीं कर सकता॥

पुत्रहीन जो आतुर भाई। सबै छांड़ि पूजें एहि भाई॥

व्याख्या:
जो भी पुत्रहीन और आतुर हैं, सभी वह इस चालीसा की पूजा करें॥

करै पाठ नित यह चालीसा। होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा॥

व्याख्या:
इस चालीसा का नित्य पाठ करने से पुत्र होता है, जो सुंदर और गुण

वान होता है, और ईश्वर का अनुभव करता है॥

दुखित हृदय में अन्याय राजे। समर्थ सभी बनवारहिं साजे॥

व्याख्या:
जब कोई व्यक्ति दुखी हृदय से अन्याय का सामना कर रहा है, तब वह इस चालीसा का पाठ करके समस्त समस्याओं का सामना कर सकता है॥

पाठ चालीसा धरै जो कोई। बरनहिं परहेज बिधि होई॥

व्याख्या:
जो कोई भी इस चालीसा का पाठ करता है, उसे बिना किसी परहेज के फल प्राप्त होता है॥

महिमा अमित अनंत बखानी। जो कोई गाए ता श्रद्धा भयानी॥

व्याख्या:
इस चालीसा की महिमा अमित और अनंत है, और जो कोई इसे गाता है, वह भक्ति और श्रद्धा के साथ करता है॥

सुनै ब्रह्मा भयहीनी। शीश नवहिं तब होहि दीनी॥

व्याख्या:
इस चालीसा को सुनने से ब्रह्मा भी भयहीन हो जाते हैं, और जब कोई व्यक्ति नवहिं तालाबंध करता है, तो वह दीनता से मुक्त हो जाता है॥

नाम संकीर्तन करै कोई। चूटहिं बनें मुक्ति सोई॥

व्याख्या:
जो कोई इस चालीसा का नाम संकीर्तन करता है, वह छूटकर मुक्ति को प्राप्त होता है॥

जो यह पाठ करै मन माहीं। मनोरथ सिद्ध होत नाहीं॥

व्याख्या:
जो व्यक्ति इस चालीसा का पाठ मन में करता है, उसकी मनोकामना सिद्ध नहीं होती है॥

वाचा नित यह चालीसा होई। सुनताहिं तन धन नहिं होई॥

व्याख्या:
जो व्यक्ति इस चालीसा को नित्य पढ़ता है या सुनता है, उसके तन और धन में कभी कमी नहीं होती॥

मातु लक्ष्मी राजसु रानी। जिनके कुल सम्पत्ति बरनी॥

व्याख्या:
हे मातरानि, तुम लक्ष्मी देवी और राजसु रानी हो, जिनके कुल में समृद्धि और सम्पत्ति की वृद्धि होती है॥

राजा दुल्हन के बरात लेकर। दुर्गा भवानी अच्छा करें॥

व्याख्या:
जब कोई राजा दुल्हन के साथ बरात लेकर आता है, तो तुम भवानी दुर्गा, उसके लिए अच्छा करती हो॥

मातु सरस्वती सदा आप राखै। मोहि संकट बचावहिं जाखै॥

व्याख्या:
हे मातरानि सरस्वती, हमेशा मेरी रक्षा करो, मुझे संकटों से बचाना॥

जब जब जगहुँ पर पठति। मोहि राखै करै तब प्रतिति॥

व्याख्या:
जब जब कोई व्यक्ति इसे पढ़ता है या सुनता है, तब-तब तुम मेरी रक्षा करती हो और मेरे प्रति प्रतिति बनती हो॥

यह चालीसा पठि पड़ि तब। धरै नहिं अपने आप मैं फब॥

व्याख्या:
जब कोई व्यक्ति इस चालीसा को पढ़ता है, तो इससे अपने आप में एक नई ऊर्जा का अनुभव होता है, और वह अपने आप को महसूस करता है॥

यही दुर्गा दैत्यविनाशिनी। तुम्हें सदा पूजै नारायणी॥

व्याख्या:
तुम्ही दुर्गा, दैत्यों का विनाश करने वाली हो, तुम्हें सदा पूजते हैं, हे नारायणी॥

कहै विद्यानिधि नीलकंठ भूप। ताको आराधत सब देवत्रूप॥

व्याख्या:
विद्यानिधि, नीलकंठ और भूप ब्रह्मा द्वारा यह कहा जाता है कि उन्होंने तुम्हें सभी देवताओं के रूप में पूजा है॥

देवनिन्दकन्या सुनहुँ भाई। कथित कहानी कहिए जबै॥

व्याख्या:
हे देवनिन्दकन्या (सरस्वती), तुम सुनो, बहन, जब मैं कहता हूँ, तो इस कथा को सुनो॥

कुमारि कुमार कृपानिधानी। जब जब श्रद्धा दृढ़ करहुँ रानी॥

व्याख्या:
हे कुमारि (सरस्वती), तुम हमेशा कुमार (कुमारि) रूप में कृपानिधानी हो, जब जब हम श्रद्धा और दृढ़ भावना के साथ तुम्हारी पूजा करते हैं, तब तब तुम विशेष रूप से हमारे साथ

होती हो॥

कृपा भई अब दास तबै। करहु इच्छा नित नैनन बलै॥

व्याख्या:
अब तुम्हारी कृपा हो गई है, इसलिए हे दास, हमारी इच्छा को पूरा करो, हमें नित्य ही आपके चरणों में बल मिलता रहे॥

मोर मन्गलवार व्रत करै। तब तब दुर्गा आशीष बरसै॥

व्याख्या:
जो भक्त मंगलवार को व्रत करता है, उसे तब-तब दुर्गा की आशीर्वाद मिलता है॥

मंत्र मुग्ध ब्रह्मा जनि बोला। पूजा कहिं शिव जु यहि होला॥

व्याख्या:
ब्रह्मा ने मंत्र मुग्ध होकर यह कहा कि इस पूजा को देवी शिव भी बहुत आकर्षक मानते हैं॥

कुल शील सुर दान तिन्हहीं। तीन लोक हैं वंछित पवनहीं॥

व्याख्या:
जो व्यक्ति इस माता की पूजा करता है, उसके कुल, शील, सुरता, और दान में वृद्धि होती है, और यह तीनों लोकों को पाने का साधन होता है॥

तिन दर्गहिं पूजा अरु गाई। तुम्हारी देखी पूजन नहिं पाई॥

व्याख्या:
तीनों लोकों में देवी दुर्गा की पूजा की जाती है और उनके साक्षात्कार को देखना बहुत कठिन है, जिसे हम देख नहीं सकते हैं॥

एही बिधि गावहिं कुमारी। ताको श्रद्धा शिवहिं करहिं भारी॥

व्याख्या:
इसी प्रकार, कुमारी (सरस्वती) की पूजा करने से ही हम उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं, जिससे भगवान शिव भी बहुत प्रसन्न होते हैं॥

कहत अयोध्यादि कबहुँ न ताता। उसहिं सुत न होई बिचारी॥

व्याख्या:
इसलिए अयोध्या और अन्य स्थानों में कभी नहीं कहते हैं कि उस स्थान से संबंधित किसी भी पुरुष की संतान नहीं होती॥

दुर्गा चालीसा कहै कोइ। जो कोई ध्यावहिं मुखि होई॥

व्याख्या:
दुर्गा चालीसा को कोई भी व्यक्ति कहे जो उसे ध्यान में ले, उसका मुक्ति हो जाता है॥

बदन कुमार कुल बचन धारी। अरजुन जिमि शर छुपाई॥

व्याख्या:
बदन कुमार, जो भी कहता है, वह उसी के बचन को धारण करता है, और उसने अर्जुन जैसे अपने शर को छुपा लिया है॥

यही चालीसा होइ गहि यारा। यह कृपा नित्य करहुँ नित कुवारा॥

व्याख्या:
इस चालीसा को गहरे भक्ति भाव से कहो, और इस कृपा को हमेशा करो, ताकि हम सदैव कुवारे रहें॥

कृपा करहुँ गहे आनुरागी। जन के जन्म मरण की भागी॥

व्याख्या:
हे दुर्गा, हम पर कृपा करो और हमें आनुरागी बना दो, ताकि हम जन्म-मरण की संसारिक बंधन से मुक्त हो सकें॥

यही चालीसा आरोग्य नायक। कीन्ह बचन रिपु भयँकर भारी॥

व्याख्या:
इस चालीसा से आरोग्य मिलता है, और इसके बचनों ने रिपुको भयभीत कर दिया है॥

जब जब दुर्गा तू दुःखराजा। संकट काटैं बहुत बड़ाई॥

व्याख्या:
जब-जब तुम दुःख रूपी राजा को देखती हो, तब-तब संकटों को काटकर बहुत बड़ाई मिलती है॥

पूजा बनी बिसई। भूत प्रेत निकट नहिं आई॥

व्याख्या:
इस पूजा से व्यक्ति भूत-प्रेत आदि के अशुभ प्रभावों से दूर रहता है, और इन्हें अपने आसपास नहीं आने देता॥

मुख से कीन श्रद्धा अनुष्ठान। पूरित कृपा रिपु सभि हानि॥

व्याख्या:
जब व्यक्ति मुख से श्रद्धा और अनुष्ठान करता है, तब उस पर पूर्ण कृपा होती है, और सभी रिपु हानि होते हैं॥

चालीसा कहत इच्छित वर पावहि। मनोरथ गृह भी न आवहि॥

व्याख्या:
जो व्यक्ति इस चालीसा का पाठ करता है, वह अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त करता है और उसके घर में कोई मनोरथ बिना पूरा होता है॥

जब जब इच्छा होवै नित करूँ। अस बर दीन्ह जाई किनहिं चूरूँ॥

व्याख्या:
जब-जब किसी की इच्छा होती है, तब-तब वह इसे नित्य करता है, और इस प्रकार वह अपने बुरे कर्मों को चूरू कर देता है॥

राम सुरत जैसे ताता। तिनके काजु सभी सिध्ध काराँ॥

व्याख्या:
रामचंद्र जी की भक्ति में लीन जैसे तुम्हारे पिता ब्रह्मा हैं, उनके सभी कार्य सिद्ध होते हैं॥

तब तब लोग नारि तुम्हारी गावहिं। बहुत बड़े भाग सुख पावहिं॥

व्याख्या:
जब-जब लोग तुम्हारे गुणगान करते हैं, तब-तब उन्हें बहुत बड़ा सुख प्राप्त होता है॥

ताहि ताहि बिस्वभारि। जबहिं राम कृपा आवहि बारि॥

व्याख्या:
हर क्षण, जब तक श्रीरामचंद्र जी की कृपा नहीं होती, तब-तब इस संसार का भार लेना पड़ता है॥

यही चालीसा होइ सिद्ध्घ कारा। पठहुँ जो नर न धरहिं कारा॥

व्याख्या:
यही चालीसा सिद्ध कारण है, जो व्यक्ति इसे पढ़ता है, उसके जीवन में सर्वशक्तिमान की कृपा होती है और उसके सभी कार्य सिद्ध होते हैं॥